OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 6

युग परिवर्तक आधार स्तम्भ की गाथा

हम सभी जब एक विद्वत, विद्वान, विदुषी या किसी इतिहासविद् या ज्योतिषि गणना के बारे में कुछ सुनते हैं तो सभी का मन करता है कि इसको पढ़ें और इसकी गहराई में जायें। लेकिन जिनका जीवन चरित्र खुद ही बोलता हो, जिन्होंने अपने कर्मों से एक ऐसी गाथा लिख छोड़ी जिसको हम सभी या कोई भी इस दुनिया का इतिहासकार जब एक से एक कड़ी जोड़े तो भी वो कड़ी कभी ख़त्म नहीं हो सकती। ऐसे महान आधार-स्तम्भ और हमारे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का जीवन है। ऐसे शक्तिशाली मानव को जब हम कभी रुपहले पर्दे पर या कागज़ पर उतारने की कोशिश करते हैं तो पता नहीं चलता कहाँ से शुरू करें, कहाँ ख़त्म करें और क्या कहें, क्या न कहें। एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व, एक सम्पूर्ण हस्ताक्षर एक किताब का, जिसको मन करता है कि देखते जाएं, कहते जाएं और सुनते जाएं। ब्रह्मा बाबा अपने आप में एक प्रखर व्यक्तित्व थे और हम कहते व्यक्तित्व हैं क्योंकि अभी भी वे हमारी सम्पन्नता के इंतज़ार में हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की कुछ बातें हैं जिसमें कहा जाता है कि अभी भी... जब स्वर्ग की स्थापना हो रही है, स्वर्गिक दुनिया लायी जा रही है, स्वर्णिम दुनिया की स्थापना हो रही है, तो ऐसी दुनिया को बनाने के लिए उनको अभी भी रुकना पड़ रहा है और अभी भी वे रुके हुए हैं क्योंकि जो व्यक्ति सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाता है और जिसके जीवन में सिर्फ और सिर्फ मात्र सेवा, मातृ सेवा और मानव सेवा समाई हो... जब तक वो कार्य सम्पन्न नहीं कर लेता तब तक वह यहाँ से नहीं जाता। अब उनकी बातें हम कर तो रहे हैं और बहुत दिनों से कर रहे हैं, 18 जनवरी 1969 को जिन्होंने शरीर त्यागा। आज 52 साल जिनको हो गये हैं और इतने सालों से जिनके बारे में सभी बता रहे हैं। सोचो...

तब भी बातें खत्म नहीं हो रही हैं। तो कितने महान व्यक्तित्व रहे होंगे वे! इतने सारे ब्रह्माकुमारीज़ के फॉलोवर्स जो उनको फॉलो करते हैं, जिन्होंने उनको नज़दीक से देखा है, जिन्होंने साकार पालना ली, जो उनके साथ बैठे, खेले, खाये, जिन्होंने उनको हर समय देखा, तो उनके लिए, उनके अंदर से बातें खत्म नहीं होती। तो ऐसे व्यक्तित्व की बातों को जब हम कभी पिरोने की कोशिश करते हैं तो शब्द कम पड़ जाते हैं। ब्रह्मा बाबा के लिए कहा जाता है कि उनकी चाल फरिश्तों की तरह थी। उन्होंने खूब अभ्यास किया। अपने आप को देह से, देह के बन्धन से मुक्त करके देही बने। वे आत्मिक स्थिति में आये और परमात्मा से सम्पूर्ण सम्बंध जोड़ने के बाद, अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व या सम्पूर्ण शरीर को प्राप्त किया। जिसको हम सूक्ष्म शरीर कहते हैं या सम्पूर्ण ब्रह्मा कहते हैं। तो ऐसे ब्रह्मा बाबा को जब हम समझना चाहेंगे तो कब समझ पायेंगे... जब उनके जैसा हम खुद बनेंगे और उनके जैसा बनने के लिए हमको भी निरन्तर अभ्यास करने की आवश्यकता है। तो जो कोई भी अनुभव हम कभी डालते हैं या लिखते हैं या उनके बारे में लिखने की कोशिश करते हैं तो वो अधूरा सा रह जाता है... जब तक हम ऐसा अभ्यास न करें। तो इस अव्यक्त मास में (पूरा जनवरी मास अव्यक्त मास माना जाता है) अगर उस व्यक्तित्व को हमें सच में पहचानना है कि वो कैसे थे, तो हमें उस तरह का अभ्यास निरन्तर करना होगा। बाबा ने 33 सालों तक 1936 से 1969 तक निरन्तर अभ्यास किया और अपने आप को उस अवस्था तक ले गये। तो हम सबको भी यदि उस अवस्था से ब्रह्मा बाबा को पहचानना है कि कैसे एक मानव परमात्मा के बिल्कुल नज़दीक जा सकता है, परमात्मा के साथ सम्पूर्ण सम्बंध स्थापित कर सकता है, तो सम्पूर्ण त्यागी, सम्पूर्ण वैरागी, सम्पूर्ण निर्विकारी वाली सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए हमें उस तरह का अभ्यास चाहिए। नहीं तो बातें सिर्फ कही जायेंगी और आप पढ़ लेंगे और पढ़ कर साइड में रख देंगे। फिर से आयेगा जनवरी, फिर हम लिखेंगे, फिर से पढ़ कर रख देंगे। तो इस तरह का अभ्यास करके देह और देह के सम्बन्धों और दैहिक पदार्थों का त्याग कर उस ब्रह्मा को पहचाना जा सकता है, जाना जा सकता है। तो आइये, हम सब एक संकल्प लें इस अव्यक्त मास में कि हमें उस व्यक्तित्व तक पहुँचने की कोशिश करनी है। उसके लिए जितनी भी हमारी बाह्य क्रियाएं हैं और बाह्य बातें हैं, उनको थोड़ा छोड़ कर सिर्फ एक बात पर फोकस करें तो निश्चित रूप से हम भी उनके जैसे बनने में सफल हो सकेंगे।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

जीवन दर्शन

मम्मा हर चीज़ में बच्चों का ध्यान खिंचवाती थीं। एक बार कराची में एक बहन ने शरीर छोड़ा। उसकी मात्र 2-3 दिन ही तबीयत खराब रही, इतने में ही शरीर छोड़ा। मम्मा ने सबको कहा, "देखो, सबको इसकी मृत्यु

सदा एवररेडी

से सबक सिखना चाहिए। मृत्यु का कोई भरोसा नहीं। यह नहीं समझो कि हम तो अभी छोटे हैं, जवान हैं, हम तो अभी बहुत दिन जियेंगे। नहीं, काल कभी भी आ सकता है। इसलिए रोज़ रात को सोने से पहले अपने आपसे पूछो कि मैं अभी ही शरीर छोड़ने को तैयार हूँ? आज ही शिव बाबा का बुलावा आये तो एवररेडी हूँ?"

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : मेरा नाम अनु है। मेरी समस्या ये है कि मेरा बेटा बात-बात में झूठ बोलता है। कई बार वो महसूस भी करता है और क्षमा भी मांगता है। लेकिन फिर से कोई न कोई घटना होती है तो फिर वो झूठ बोल देता है। लगता है कि उसकी ये आदत उसके लिए परेशानी का सबब बन सकती है। कृपया बतायें कैसे वो इस आदत से मुक्त हो सकता है?

उत्तर : सत्य हमें शक्ति प्रदान करता है। सत्य हमारी पर्सनैलिटी को चमकाने वाला है। कहते हैं ना गॉड इज़ ट्रूथ। जब भगवान ही सत्य है तो उसकी सन्तानें होने के नाते हमें भी सत्य होना चाहिए। प्योरिटी भी सत्य है और हमारी शांति भी सत्य है। जो व्यक्ति झूठ बोलता है उस पर कोई विश्वास नहीं करता, उसका जीवन खराब हो जाता है। आप चाहती हैं कि आपका बच्चा झूठ न बोले तो रोज़ एक टाइम फिक्स करके 10 मिनट उसको गुड वायब्रेशन्स देने चाहिए। और फिर संकल्प दें कि तुम तो भगवान के बच्चे हो जो सत्य है। तुम भी सत्य हो। तुम्हें भी सत्य बोलना है। तुम भी आज से सत्य बोलोगे। तुम एक महान आत्मा हो। अरे तुम्हें तो सत्य का प्रचार करना है। तुम सदा ही सत्य बोलोगे। बस ये संकल्प उसको दें, ये वायब्रेशन उसको दें और फिर धीरे-धीरे सब्कॉन्शियस माइंड इसे ग्रहण करने लगेगा। और ये आदत जो बन गई है वो डिलीट हो जायेगी।

प्रश्नः हमने कई बार ये सुना है कि साक्षात्कार के लिए एक जटिल प्रक्रिया है। भक्ति मार्ग में ये मानते हैं कि इसके लिए एक लम्बी-चौड़ी साधना की आवश्यकता होगी। बहुत उपवास, पूजा, व्रत रखना होगा। ये सारी चीज़ें करने के बाद ही ईश्वर के दर्शन किये जा सकते हैं। क्या ब्रह्माकुमारीज़ में ऐसी कुछ प्रक्रियाएं हैं, ऐसी साधना करनी पड़ती है जिससे कि हमें साक्षात्कार हो?

उत्तरः शास्त्रों में, पुराणों में ये बहुचर्चित है कि फलाने व्यक्ति ने हज़ारों साल तपस्या की और उसको ऐसे दिव्य दर्शन प्राप्त हुए। लेकिन ये हज़ारों साल एक जन्म में नहीं होता। ये जन्म बाइ जन्म, पुनर्जन्म लेते लेते जब लम्बा काल बीत जाता है, और जो सच्चे मन से, निष्काम भाव से, अव्यभिचारी भाव से भक्ति करते हैं उनको जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं तो पूरा साक्षात्कार करा देते हैं। तो यहाँ जो आत्मायें आयी हैं इस संस्था में, ये लम्बे काल के भक्त हैं। इन्होंने लम्बा काल यानी हज़ारों साल प्रभु प्रेम में व्यतीत किया है, उसकी आराधनायें की हैं, अनेक तरह की तपस्याएं की हैं, विभिन्न साधनाओं में जीवन गुज़ारा है। अब इनकी भक्ति का काल पूर्ण होता है। तो इन्हें ज्ञान मिलता है, भगवान मिलते हैं, जो भी ये देखना चाहते हैं, चाहे निराकार शिव को देखना चाहें, महादेव को देखना चाहें, विष्णु के दर्शन करना चाहें, वो उन्हें प्राप्त हो जाते हैं।

प्रश्नः काफी समय से हमारी परिस्थिति ठीक नहीं चल रही है। तन, मन, धन लगाकर बहुत मेहनत करने के बावजूद भी सब घाटे में जाता दिखाई देता है। हमें समझ नहीं आ रहा है कि ऐसा क्यों हो रहा है हमारे साथ? कृपया कोई समाधान बताएं।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

उत्तरः कुछ पूर्व जन्मों के खाते के अनुसार मनुष्य बुरे समय से गुज़रने लगता है। जहाँ काम करेगा वहीं गलत हो जायेगा। सोने को भी हाथ लगा दे तो मिट्टी हो जायेगा। बिगड़ने लगेगा खेल। परिवारों में कोई तकलीफें आ जायेंगी, बीमारियां आ जायेंगी। लेकिन राजयोग में ऐसी शक्ति है कि अगर कोई सच्चे मन से एकाग्रता के साथ ये कर ले तो बुरे दिन अच्छे दिन में बदल जाते हैं और जीवन बिल्कुल प्रकाश में आ जाता है और कठिनाइयों से दूर हो जाता है। तो इसमें ये तीन संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है... इनका अंदर से चिंतन करते हुए अभ्यास करने से एक एनर्जी वायब्रेट होती है और मनुष्य इन चीज़ों से मुक्त हो जाता है। तो सभी अगर राजयोग अभ्यास करेंगे तो ऐसी जो बुरी परिस्थिति जीवन में आ जाती है वो सहज ही पार हो जायेगी।

प्रश्नः पवित्रता पर एक बात और ध्यान में आती है कि भारत में बहुत सारे ऐसे मंदिर हैं जिसमें देवी-देवताओं के ऐसे चित्र बनाये गये हैं जो मन में ये भ्रम पैदा करते हैं कि शायद आदिकाल से ही ये जो विकार है वो चला आ रहा है, तो इसे क्यों दबाया जाये? क्यों एक प्रकार से अपने को परेशान किया जाए अपनी इस फीलिंग को दबा करके? कृपया इसके बारे में थोड़ा बताएं।

उत्तरः मैं एक बार ऐसे ही एक मंदिर में पहुंचा जो ओडिशा में है। मैंने वहाँ के एक अच्छे विद्वान से ये प्रश्न किया कि ये क्यों दिखाया है गंदगी। क्योंकि वो गंदगी ऐसी है कि वहाँ कोई देखना नहीं चाहता बाहर। तो उन्होंने एक अच्छा रहस्य बताया कि जब भारत में बौद्ध धर्म बहुत बढ़ गया था, और बहुत लोग बौद्ध धर्म को अपनाकर पवित्रता को अपनाने लगे थे। तब शंकराचार्य ने आकर बौद्ध धर्म को भारत से समाप्त किया तो लोगों में ये एक भ्रम हो गया कि अब सबने ब्रह्मचर्य अपना लिया है, अब कैसे पुनः संतान उत्पत्ति होगी और कैसे ये संसार चलेगा! तभी कुछ लोगों ने ये प्रचार किया कि देवताएं भी भोगी थे। उस समय लोग बहुत मंदिरों में जाने लगे थे तो उन्होंने सोचा कि मंदिरों में ऐसे चित्र बना दिये जायें जिनसे लेसन लेकर लोग पुनः भोग-विलास की ओर बढ़ें। तो वास्तव में ये देवताओं के अंतिम समय की बातें हैं जब वे वाम मार्ग में गये। अन्यथा देवता लम्बे काल तक सतयुग और त्रेतायुग में सम्पूर्ण पवित्र ही थे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'